Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
July to September 2024, E-Journal, Vol. I, Issue XLVII, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

अमरकांत के उपन्यास साहित्य में चित्रित स्त्री की समस्याएँ

स्मिता मिठोरा* डॉ. वंदना अग्निहोत्री**

* शोधार्थी (हिन्दी) माता जीजाबाई शासकीय स्नातकोत्तर कन्या महाविद्यालय, इन्दौर (म.प्र.) भारत
** प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष (हिन्दी) माता जीजाबाई शासकीय स्नातकोत्तर कन्या महाविद्यालय, इन्दौर (म.प्र.) भारत

प्रस्तावना – भारत – कर्मभूमि, वेदभूमि है। सदियो से हम वेदो का पालन, उपनिषदों के अनुसार आचरण और प्राचीन मान्यताओ को सुरक्षित रूप से मानते आये हैं। जैसे अतिथि सत्कार, स्त्री के प्रति आदर भाव कर्मकांडो पर विश्वास, धर्मनिष्ठता आध्यात्मिक परंपराओ के अनुसार गतिविधियो को पालन करते रहे है। विशेष रूप से इस धरती पर स्त्री को साक्षात् देवी के रुप मे ऊँचा स्थान प्रदान किया गया था । प्रकृति स्वरूपा नारी को कभी ज्ञानदायिनी (सरस्वती), भाग्यदायिनी (लक्ष्मी) और कभी प्रचंड शक्ति के रूप में (महाकाली) पूजते आये हैं। नारी के प्रति हमारी यह धारणा रही है। 'यत्रनार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता' अर्थात् जहाँ स्त्री की पूजा होती है वहाँ देवतागण निवास करते हैं। वैदिक काल में स्त्री को केवल मान–सम्मान ही नहीं दिया जाता था बल्कि पुरुषों के साथ समान रूप से उनका महत्व माना जाता था।

वे मूल्य अब नहीं रहे, जो मानवता और पवित्र जीवन जीने के लिए मदद्गार थे । धीरे–धीरे समाज में कुतंत्र, स्वार्थ, अन्याय, अनाचार का विष फैलने लगा । समाज में केवल धोखाधड़ी से ही बहुत लोगो के दिन गुजरते हैं। समाज की ऐसी परिस्थितियों में नारी की क्या हालत होती है और उसे समाज कितनी हीन स्थिति में पहुंचा चुका है यह सोचनीय विचार है। जहाँ स्त्री का मान–सम्मान था वही पर स्त्री को संकुचित भाव से देखना, उस पर अत्याचार करना आरंभ हो गया। स्त्री एक तरफ ऊँचे आदर्शो से युक्त मानी गयी तो दूसरी तरफ कुलटा, व्यभिचारिणी, कुलनाशनी, बदचलन जैसी अपमान जनक उपाधियों से नवाजा गया। उपन्यासकार अमरकांत अपने साहित्य में स्त्रियो की हालत सुधारने का बहुत प्रयत्न करते हैं। उनके साहित्य मे मध्यवर्गो और निस्सहाय स्त्रियो का संघर्ष एवं मौन वेदना दिखाई पड़ती है। इनके साहित्य मे स्त्री हर परिस्थितियो का सामना करते हुए अपना अस्तित्व सँभालने में सक्षम है, यह संदेश दिया गया है। आखिर एक सफल साहित्यकार का कर्तव्य यह होता है कि समाज में कमियों को सुधारने का मार्ग सुगम बनाये । अमरकांत ने भी उस दिशा मे सफलता हासिल की है।

समाज में अकेली औरत का कोई अस्तित्व नहीं रहा। क्योंकि समाज केवल उन स्त्रियो के लिए हैं जो पति या पुत्र के संरक्षण में रहती है। परित्यक्ता स्त्री की हालत इस समाज मे गली के जनावर से भी बदत्तर थी। अमरकांत के उपन्यास 'सुन्नर पांडे की पतोह' मे एक पति परित्यक्ता स्त्री की हालत और उस पर समाज की दृष्टि को स्पष्ट किया गया है। कहानी के एक संदर्भ पर सुन्नर पांडे की पतोह का पति झुल्लन पांडे पत्नी को छोड़कर साधु– सन्यासियो मे मिल जाता है। यह कहानी वहाँ के मोहल्ले में हर किसी को मालूम थी। फिर भी इसके बारे मे सब अपनी–अपनी कहानी रचने लगते हैं। अनेक शंकाओ से बात को उल्टा–सीधा समझना ही एक लक्ष्य बन गया था। 'सुन्नर पाडे की पतोह' मे राजलक्ष्मी का संघर्ष उसके जीवन का हिस्सा है। हर कदम पर अपने साथ गुजरती, हर परिस्थिति के साथ एक साधारण महिला किस तरह जीवन काटती है, अमरकांत जी ने सजीवता से चित्रित करते हुए समाज को जागृत करने का प्रयास किया है। 'एक निस्सहाय औरत को एक तरफ समाज की बुरी चिंतन, दूसरी तरफ कामांधो की दृष्टि से बचना बहुत ही मुश्किल बन जाता है। औरत अकेली है तो समाज को मौका मिलता है उसे जाँचने–परखने का और तरह–तरह की शंकाओं से सताने का, स्त्री जिस समाज मे रहती है उस समाज से वह रक्षा नहीं कर पाती बल्कि भक्षण का शिकार हो रही है।' [1]

स्त्री की समस्याएँ वैवाहिक जीवन से नहीं तभी से शुरू हो जाती है जब वे यौवनावस्था में पैर रखती है। निस्सहाय और बेसहारा स्त्रियो पर बुरे विचार रखना या बुरी हरकते करना पुरुषों के लिए एक साधारण विषय बन चुका है। इस विषय से विचलित होकर अमरकांत जी अपनी रचनाओ से अपना दु:ख व्यक्त करते है और समाज पर तीखे प्रहार भी करते हैं। अमरकांत के उपन्यास 'ग्रामसेविका' में दमयन्ती के प्रति प्रधानजी का व्यवहार बहुत ही घटिया था। दमयन्ती जैसी जवान लड़कियो को देखकर उसके मुँह में पानी भर आता है। किसी तरह उसे पाने के लिए वह बहुत उतावला हो जाता है। कभी दमयन्ती के बेसहारा होने के कारण दबाव बनाता है तो कभी चोर–डाकुओ की कहानियों से डराना चाहता है। स्त्री के प्रति अपनी घटिया मानसिकता इस तरह प्रकट करता है, 'अरे, औरत की भी कोई इज्जत होती है? औरत बनी है मर्द के लिए। डर नहीं है, डर नहीं है। अगर रात बारह बजे उसको अपने घर नहीं बुलवाया तो मेरा नाम विचित्र नारायण दुबे नहीं।.... '[2]

इस संदर्भ से लेखक ने यही संदेश दिया है कि स्त्री को हमेशा सतर्क रहना है, क्योंकि यह समाज पुरुष प्रधान हैं। यह समाज सिर्फ और सिर्फ पुरुषों के लिए ही है, इसीलिए सारे नीति–नियमो की जिम्मेदारियाँ केवल स्त्री पर ही लागू है। पुरुष अपने नीति नियमो को तोडकर स्त्री पर मन–मर्जी चलाने मे थोडे भी हिचकते नहीं समाज ऐसे कीचको के लिए भी कुछ नहीं करता जो स्त्रियों के साथ मनमानी करते हैं।

भारतीय समाज में स्त्री के लिए पति प्रत्यक्ष देवता है। वह कभी अपने मर्द के खिलाफ नहीं सोचती है, चाहे वह असमर्थ हो या आवारा हो । उसके लिए सर्वस्व समर्पित कर देती है। स्त्री अपना धर्म मानकर ऐसा आचरण करती है। परन्तु यही आचार–विचार धीरे–धीरे समाज में नारी पर संकीर्ण

विचारों का शुरूवात है। अमरकांत के उपन्यास 'काले उजले दिन' एक मध्यवर्गीय पाबन्दियो से जकड़ी एक जवान लड़की की कहानी है। उपन्यास के कथानायक बचपन से ही विमाता होने के कारण कठिनाईयो का सामना करता है। युवावस्था में माता–पिता उसके मन मुताबिक शादी कर देते है। शादी के पहले दिन ही पत्नी को देखकर वह उदास हो जाता है क्योकि कांती पढ़ाई और आधुनिक तौर–तरीको से बिल्कुल अनजान थी। उसकी सूरत भी उतनी आर्कषक नहीं थी। परन्तु वह सुशील, सदाचारी और निर्मल स्वभाव की रहती है। अपने पति आत्मसमर्पण की भावना से कहती है कि – 'मैं अपने भाग्य से बहुत खुश हूँ। भगवान ऐसा भाग्य हर स्त्री को है। देखिए न, मुझमे क्या है? न मैं खूबसूरत हूँ और न मुझमे कोई गुण है। फिर भी आप जैसा पति मुझे मिला है। ऐसी खुश किस्मत कौन होगी ?....'[3] इस तरह कांती अपने पति के प्रति आत्मसमर्पण की भावना रखती है तो कथानायक उस प्यार की उपेक्षा करके अन्य स्त्री के लिए लालायित होता है। उसे धोखा देता है।

अमरकांत जी अपनी सारी रचनाओ में स्त्री संबंधित संघर्ष पर और समाज की संकीर्ण दृष्टि पर व्यथित होकर समाज के रवैये में बदलाव लाने के लिए प्रयत्नशील रहे है। आज की दुनिया में स्त्री इतनी चेतना संपन्न हुई है कि वह अपने जीवन का निर्णय स्वयं लेने लगे। उपन्यासकार अमरकांत सामाजिक चेतना का असली अर्थ यही समझाते है कि नारी अपने आप में नूतन शक्ति बनकर इस समाज के विरुद्ध लड़े। ऐसा करना ही समाज के लिए कल्याणकारी हो सकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. अमरकांत – सुन्नर पांडे की पतोह, पृ सं. 54
2. अमरकांत, ग्रामसेविका, प्र सं – 5
3. अमरकांत, काले उजले दिन, पृ सं – 162, 163

****